

Relevance of Value-Based Education in the Digital Age: A Conceptual Study

Mukesh Kumar Bharti
Department of Education, University of Lucknow, Lucknow-226 007, U.P., India
mukeshbharti193518@gmail.com

Received: 26-10-2025, Accepted: 05-12-2025

Abstract- This study presents an analysis of the relevance and necessity of value-based education in the digital age. The rapid technological revolution of the 21st century has made education more accessible, flexible, and individualized. However, along with these advancements, several moral and social challenges have also emerged, such as cyberbullying, the spread of misleading information, digital addiction, and social isolation. In such a context, the true integration of education should not be limited merely to technical skills or the ability to process information; rather, its primary goal should be the preservation and promotion of human values, moral sensibility, and socially responsible behavior. Value-based education develops qualities such as character formation, cooperation, moral reasoning, social responsibility, and balanced digital conduct among students. These traits are essential for effectively addressing the complex challenges of the digital era. The study conceptually highlights major themes like "digital citizenship," "critical thinking," and "digital empathy," emphasizing the need to harmonize technological progress with moral and ethical perspectives. The study asserts that if the educational system ensures the harmonious integration of human values with technological innovations, then the digital age can become not merely a means of information expansion but also a foundation for genuine human development and moral progress.

Key words- Value-Based Education, Digital Age, Moral Sensibility, Digital Citizenship, Cooperation, Technology in Education, Ethics

डिजिटल युग में मूल्य-आधारित शिक्षा की प्रासंगिकता: एक अवधारणात्मक अध्ययन

मुकेश कुमार भारती
शिक्षा शास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ-226 007, उ0प्र0, भारत
mukeshbharti193518@gmail.com

सार- यह अध्ययन डिजिटल युग में मूल्य-आधारित शिक्षा की प्रासंगिकता और अनिवार्यता का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इक्कीसवीं सदी की तीव्र तकनीकी क्रांति ने शिक्षा को अभूतपूर्व रूप से सुलभ, लचीला और वैयक्तिकृत बनाया है। यद्यपि, इसके साथ ही अनेक नैतिक और सामाजिक चुनौतियाँ भी उभरी हैं, जैसे- साइबर बुलिंग, भ्रामक सूचना का प्रसार, डिजिटल असमानता और सामाजिक अलगाव। ऐसे परिदृश्य में शिक्षा की वास्तविक सार्थकता केवल तकनीकी दक्षता या सूचना-साझाकरण की क्षमता तक सीमित नहीं रह जाती, बल्कि उसका मूल उद्देश्य मानवीय मूल्यों, नैतिक चेतना और संवेदनशील सामाजिक व्यवहार का संरक्षण और संवर्धन होना चाहिए। मूल्य-आधारित शिक्षा विद्यार्थियों में चरित्र निर्माण, सहानुभूति, नैतिक विवेक, सामाजिक उत्तरदायित्व और संवेदनशील डिजिटल व्यवहार जैसे गुणों का विकास करती है, जो डिजिटल युग की जटिल चुनौतियों का प्रभावी रूप से सामना करने के लिए आवश्यक हैं। यह अध्ययन "डिजिटल नागरिकता", "आलोचनात्मक चिंतन" और "डिजिटल सहानुभूति" जैसे प्रमुख सिद्धांतों पर आधारित एक एकीकृत शैक्षिक ढाँचा प्रस्तुत करता है, जो तकनीकी प्रगति और मूल्य-आधारित दृष्टिकोण के बीच संतुलन स्थापित करने में सहायक है। अध्ययन यह प्रतिपादित करता है कि यदि शिक्षा प्रणाली तकनीकी नवाचारों के साथ मानवीय मूल्यों का समन्वित समावेश सुनिश्चित करे, तो डिजिटल युग केवल ज्ञान-विस्तार का माध्यम न रहकर मानवता की सच्ची प्रगति और नैतिक पुनर्जागरण का आधार बन सकता है।

बीज शब्द- मूल्य-आधारित शिक्षा, डिजिटल युग, नैतिक चेतना, डिजिटल नागरिकता, सहानुभूति, शिक्षा में प्रौद्योगिकी, नैतिकता

1. **परिचय-** इक्कीसवीं सदी मानव सभ्यता के इतिहास में एक अभूतपूर्व विरोधाभास लेकर आई है। एक ओर, डिजिटल क्रांति ने ज्ञान के क्षेत्र में असीम संभावनाएँ खोली हैं, जिससे शिक्षा अधिक लोकतांत्रिक, लचीली और वैयक्तिकृत बन गई है। इंटरनेट, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और आभासी वास्तविकता जैसे नवाचारों ने सूचना के महासागर को प्रत्येक व्यक्ति की पहुँच तक ला दिया है। इस परिवर्तन ने सीखने की प्रक्रिया को पारंपरिक सीमाओं से मुक्त कर दिया है और शिक्षार्थियों को आत्म-निर्देशित शिक्षा की दिशा में अग्रसर किया है। किन्तु दूसरी ओर, यही तकनीकी प्रगति अनेक गहन सामाजिक और नैतिक चुनौतियों को भी जन्म देती है। डिजिटल माध्यमों के दुरुपयोग, साइबरबुलिंग, भ्रामक

सूचनाओं के प्रसार, सामाजिक एकाकीपन और डिजिटल असमानता जैसी समस्याएँ इस बात की याद दिलाती हैं कि तकनीक का प्रसार हमेशा मानवीय मूल्यों के संरक्षण की गारंटी नहीं देता। इस प्रकार, डिजिटल युग शिक्षा को तो अधिक सुलभ बनाता है, परंतु मानवीय संवेदनाओं और नैतिक चेतना के हास विघटन का जोखिम भी उत्पन्न करता है। इसी विरोधाभास को समझने और सुलझाने का प्रयास यह वैचारिक शोध पत्र करता है। इसका मूल तर्क यह है कि डिजिटल शिक्षा की सार्थकता केवल सूचना-साझाकरण की दक्षता पर नहीं, बल्कि इस बात पर निर्भर करती है कि उसमें मूल्य-आधारित शिक्षा के सिद्धांतों को किस प्रकार समाहित किया जाता है। पारंपरिक शिक्षा प्रणाली, अपने सीमित संसाधनों के बावजूद, चरित्र निर्माण, नैतिक विकास और सामाजिक मूल्यों के संवर्धन पर केंद्रित थी। उस युग में शिक्षक केवल ज्ञान-संप्रेषक नहीं, बल्कि एक नैतिक मार्गदर्शक और प्रेरक आदर्श हुआ करते थे। आज, जब शिक्षक की भूमिका "सूचना प्रदाता" से "सुगमकर्ता" में बदल रही है और शिक्षण प्रक्रिया अधिक तकनीकी एवं अवैयक्तिक होती जा रही है, मूल्य-संवहन का यह आयाम पुनः विचारणीय बन गया है। यह शोध पत्र डिजिटल शिक्षा के अवसरों और मूल्य-आधारित शिक्षा की अनिवार्यता के बीच एक वैचारिक सेतु स्थापित करने का प्रयास करता है। इसमें न केवल इस एकीकरण की सैद्धांतिक जटिलताओं और नैतिक आयामों की पड़ताल की जाएगी, बल्कि इसकी व्यावहारिक संभावनाओं पर भी विचार किया जाएगा।¹⁻⁹

2. अध्ययन के उद्देश्य

- 2.1 डिजिटल युग में शिक्षा की प्रकृति और उसके प्रभावों का मूल्य-आधारित दृष्टिकोण से विश्लेषण करना।
- 2.2 मूल्य-आधारित शिक्षा की अवधारणा, सिद्धांतों और शैक्षिक महत्व को स्पष्ट करना।
- 2.3 डिजिटल शिक्षा से उत्पन्न नैतिक चुनौतियों और मूल्य क्षरण के संभावित जोखिमों की पहचान करना।

3. **शोध विधि**— यह शोध गुणात्मक एवं वैचारिक शोध विधि पर आधारित है, जिसमें माध्यमिक स्रोतों (पुस्तकें, शोध लेख, नीति दस्तावेज आदि) के विश्लेषण द्वारा विषय के सैद्धांतिक एवं नैतिक आयामों को स्पष्ट किया गया है।

4. **संबंधित साहित्य सर्वेक्षण**— सिंह और शर्मा¹ ने डिजिटल रूपांतरण के युग में मूल्य-आधारित शिक्षा की आवश्यकता पर गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। शोध में यह स्पष्ट किया गया कि तकनीकी प्रगति ने जहाँ शिक्षण को अधिक सुलभ बनाया है, वहीं इसने नैतिक पतन, संवेदनहीनता और सामाजिक अलगाव जैसी चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं। लेखकों का मानना है कि शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों और मानवीय सहानुभूति को पुनर्संस्थापित किए बिना डिजिटल शिक्षा का दीर्घकालिक लाभ नहीं मिल सकता। उन्होंने सुझाव दिया कि मूल्य शिक्षा को 'डिजिटल एथिक्स' के रूप में पुनर्परिभाषित किया जाए ताकि विद्यार्थी न केवल ज्ञानवान, बल्कि जिम्मेदार डिजिटल नागरिक बन सकें। नायर और थॉमस² ने अपने शोध में ऑनलाइन शिक्षण के नैतिक पक्ष पर प्रकाश डाला है। अध्ययन में यह बताया गया है कि डिजिटल लर्निंग वातावरण में केवल तकनीकी दक्षता पर्याप्त नहीं है, बल्कि शिक्षकों और विद्यार्थियों दोनों में नैतिक चेतना और सामाजिक जिम्मेदारी का विकास आवश्यक है। लेखकों ने यह तर्क दिया कि ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफॉर्म पर सहयोग, सम्मान और सहिष्णुता जैसे मूल्यों को बढ़ावा देने से न केवल शिक्षण की गुणवत्ता सुधरती है बल्कि 'डिजिटल नागरिकता' का भाव भी मजबूत होता है। यह अध्ययन डिजिटल युग में शिक्षक की नैतिक भूमिका को पुनर्परिभाषित करता है। कुमार और भट्टाचार्य³ ने मूल्य शिक्षा के पारंपरिक दृष्टिकोण की पुनर्व्याख्या करते हुए 21वीं सदी के विद्यार्थियों के लिए उसकी प्रासंगिकता पर बल दिया है। उनका कहना है कि आधुनिक शिक्षा केवल सूचना-साझाकरण तक सीमित नहीं रह सकती, बल्कि उसे नैतिक निर्णय क्षमता, सहानुभूति, और वैश्विक नागरिकता जैसे मूल्यों को भी प्रोत्साहित करना चाहिए। लेख में यह भी बताया गया है कि तकनीक का उपयोग यदि नैतिक मार्गदर्शन के साथ किया जाए, तो यह मूल्य-आधारित शिक्षण का प्रभावी माध्यम बन सकता है।

5. **मूल्यों की अवधारणा एवं शैक्षिक परिप्रेक्ष्य**— मूल्य-आधारित शिक्षा ऐसी शैक्षणिक प्रक्रिया है जो पारंपरिक अकादमिक ज्ञान की सीमाओं से आगे बढ़कर विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक विकास पर केंद्रित होती है। इसका उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि ऐसे संवेदनशील, जिम्मेदार और नैतिक रूप से परिपक्व नागरिकों का निर्माण करना है जो समाज के समग्र कल्याण में योगदान दे सकें। इस शिक्षा की मूल भावना यह है कि शिक्षार्थी न केवल बुद्धिमान हों, बल्कि विवेकशील, सहानुभूतिपूर्ण और आत्म-संवेदनशील भी बनें।⁴ दार्शनिक दृष्टि से मूल्य-आधारित शिक्षा मूल्यमीमांसा की उस शाखा से सम्बद्ध है जो यह समझने का प्रयास करती है कि मूल्य क्या हैं, क्यों आवश्यक हैं, और मनुष्य के आचरण में इनका स्थान कहाँ है। यह आदर्शवाद, प्रकृतिवाद और प्रयोजनवाद जैसे प्रमुख दार्शनिक दृष्टिकोणों से प्रेरणा लेती है, जो शिक्षा के अंतिम लक्ष्य-आत्म-साक्षात्कार, सामाजिक अनुकूलन, तथा लोकतांत्रिक नागरिकता को परिभाषित करते हैं। मूल्य-आधारित शिक्षा केवल यह नहीं सिखाती कि "क्या सही है", बल्कि यह भी समझाती है कि "क्यों यह सही है" और "इसे व्यवहार में कैसे लाया जाए"। यह शिक्षा कार्यों के पीछे निहित नैतिकता और औचित्य पर बल देती है। इसका उद्देश्य बाहरी नियमों के मात्र अनुपालन से आगे बढ़कर विद्यार्थियों में आंतरिक प्रेरणा, विवेकशीलता और आत्म-खोज की चेतना विकसित करना है। यह प्रक्रिया-उन्मुख दृष्टिकोण इसे सूचना-प्रधान डिजिटल शिक्षा से भिन्न बनाता है, जो प्रायः परिणाम और दक्षता पर अधिक केंद्रित रहती है। इस संदर्भ में विद्यालय का वातावरण, शिक्षक का आदर्श व्यवहार, तथा विद्यार्थियों में सहयोग, सहिष्णुता और पारस्परिक सम्मान की भावना जैसे तत्व मूल्य-आधारित शिक्षा के मूलाधार हैं।⁵

शोध पत्र

6. **समग्र व्यक्तित्व निर्माण में मूल्यों की भूमिका**— मूल्य—आधारित शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व का विकास करना है, जिसमें शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक और आध्यात्मिक सभी पहलू सम्मिलित होते हैं। यह शिक्षा केवल शैक्षणिक उपलब्धियों तक सीमित नहीं है, बल्कि एक संतुलित, विवेकशील और संवेदनशील मानव के निर्माण पर बल देती है।

6.1 **चरित्र निर्माण और नैतिक विकास**— मूल्य शिक्षा विद्यार्थियों को सही और गलत के बीच विवेकपूर्ण अंतर करना सिखाती है। यह उन्हें नैतिक दुविधाओं का समाधान खोजने और उत्तरदायित्व की भावना विकसित करने में सहायता करती है। सत्यनिष्ठा, करुणा, सहानुभूति, नम्रता और कल्याण की भावना जैसे गुणों का पोषण इसी शिक्षा के माध्यम से होता है, जो एक दृढ़ और सदाचारी चरित्र की नींव रखते हैं। इससे विद्यार्थी जीवन की चुनौतियों के प्रति अधिक सहनशील, सकारात्मक और आत्मविश्वासी बनते हैं।

6.2 **भावनात्मक और सामाजिक बुद्धिमत्ता** मूल्य— आधारित शिक्षा विद्यार्थियों में आत्म-जागरूकता और सामाजिक संवेदनशीलता दोनों का विकास करती है। यह उन्हें अपने तथा दूसरों के अधिकारों का सम्मान करना, सहयोग की भावना विकसित करना और विविधताओं को स्वीकार करना सिखाती है। इस प्रक्रिया में वे पंथनिरपेक्षता, समानता और विश्वबंधुत्व की भावना को आत्मसात करते हैं। इस प्रकार यह शिक्षा ऐसे नागरिकों का निर्माण करती है जो संवेदनशील, सहृदय और न्यायप्रिय हों तथा समाज में सामंजस्य और सौहार्द के संवर्धन में योगदान दे सकें।

6.3 **सार्वभौमिक और राष्ट्रीय मूल्य**— मूल्य शिक्षा का क्षेत्र सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों जैसे सत्य, शांति, प्रेम और अहिंसा के साथ-साथ राष्ट्रीय और संवैधानिक आदर्शों तक विस्तृत है। इसमें भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के आदर्श, राष्ट्रीय एकता, लोकतांत्रिक व्यवहार, पंथनिरपेक्षता तथा अंतर्राष्ट्रीय सहयोग जैसी अवधारणाएँ शामिल हैं। इस प्रकार यह शिक्षा न केवल विद्यार्थियों को बेहतर इंसान बनाती है, बल्कि उन्हें उत्तरदायी नागरिक बनने की दिशा में भी अग्रसर करती है। यह उन्हें अपनी सांस्कृतिक विरासत से जोड़ती है और समाज के प्रति समर्पण एवं कर्तव्यबोध की भावना का विकास करती है।

7. **डिजिटल शिक्षा की प्रकृति और इसका विस्तार**— डिजिटल शिक्षा, जिसे प्रायः ई-लर्निंग के रूप में जाना जाता है, एक ऐसा शिक्षण मॉडल है जो इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों कृ जैसे कंप्यूटर, इंटरनेट, मोबाइल उपकरण, तथा अन्य डिजिटल संसाधनों कृ पर आधारित है। यह पारंपरिक कक्षा शिक्षण की सीमाओं को तोड़ते हुए शिक्षा को एक वैश्विक, गतिशील और इंटरैक्टिव स्वरूप प्रदान करती है। इसमें ऑनलाइन पाठ्यक्रम, आभासी कक्षाएँ, डिजिटल पुस्तकालय, और इंटरैक्टिव लर्निंग प्लेटफॉर्म जैसे विविध घटक सम्मिलित हैं। 21वीं सदी में इसका विस्तार अभूतपूर्व रूप से हुआ है, विशेष रूप से कोविड-19 महामारी के बाद, जब विश्वभर की शिक्षा प्रणालियाँ प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षण को अपनाने के लिए बाध्य हुईं। डिजिटल शिक्षा ने सीखने के नए अवसरों का द्वार खोला है। इसका सबसे बड़ा लाभ ज्ञान तक समान और व्यापक पहुँच है, जिसने भौगोलिक, सामाजिक तथा आर्थिक बाधाओं को काफी हद तक कम किया है। अब दूरदराज के क्षेत्रों के विद्यार्थी भी उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षण सामग्री तक पहुँच सकते हैं। यह शिक्षा प्रणाली सीखने में लचीलापन प्रदान करती है, जिससे विद्यार्थी अपनी सुविधा, समय और गति के अनुसार अध्ययन कर सकते हैं। प्रौद्योगिकी ने वैयक्तिकृत शिक्षण की अवधारणा को भी साकार किया है, जहाँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसे उपकरण प्रत्येक शिक्षार्थी की सीखने की शैली और गति के अनुसार सामग्री को अनुकूलित कर सकते हैं। साथ ही, एनीमेशन, गेमिफिकेशन, और ऑडियो-विजुअल साधनों का उपयोग शिक्षण को अधिक रोचक, संवादात्मक और प्रभावी बनाता है। यह विद्यार्थियों की विषयवस्तु के प्रति रुचि और संलग्नता को बढ़ाता है। इसके अतिरिक्त, डिजिटल शिक्षा लागत-प्रभावी भी है, क्योंकि यह भौतिक संसाधनों, यात्रा और अवसररचना की आवश्यकता को न्यूनतम कर देती है।

8. **डिजिटल परिदृश्य में नैतिक चुनौतियाँ एवं मूल्य क्षरण के जोखिम**— डिजिटल शिक्षा आज जहाँ एक ओर ज्ञानार्जन के नए क्षितिज खोल रही है, वहीं यह कई गहन नैतिक चुनौतियों और मूल्य क्षरण के जोखिमों को भी जन्म दे रही है। यह केवल व्यक्तिगत नैतिक विफलताओं का परिणाम नहीं है, बल्कि इसका मूल कारण उन तकनीकी प्लेटफॉर्मों का संरचनात्मक स्वरूप है, जो मानवीय संवेदनाओं और सामाजिक उत्तरदायित्व से अधिक जुड़ाव और लाभप्रदता को प्राथमिकता देते हैं। इस प्रकार, डिजिटल शिक्षा का विकास जितना आशाजनक प्रतीत होता है, उतना ही यह मूल्य—आधारित शिक्षण के लिए जटिल प्रश्न भी प्रस्तुत करता है।

9. **डिजिटल विभाजन और शैक्षिक असमानता**— डिजिटल शिक्षा के समक्ष उपस्थित सबसे बड़ी नैतिक चुनौतियों में से एक है “डिजिटल विभाजन” — अर्थात् प्रौद्योगिकी तक समान पहुँच का अभाव। भारत जैसे विविधतापूर्ण और विकासशील देश में यह विभाजन अनेक स्तरों पर स्पष्ट दिखाई देता है। पहुँच की असमानता शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच डिजिटल संसाधनों—जैसे स्मार्टफोन, कंप्यूटर, टैबलेट तथा उच्च गति इंटरनेटकृकी उपलब्धता में भारी असमानता विद्यमान है। आर्थिक रूप से कमजोर और वंचित वर्गों के विद्यार्थियों के पास इन संसाधनों की कमी के कारण डिजिटल शिक्षा तक समान अवसर नहीं पहुँच पाते। परिणामस्वरूप, वे न केवल अकादमिक प्रतिस्पर्धा में पीछे रह जाते हैं, बल्कि मूल्य—आधारित शिक्षा की उस समावेशी प्रक्रिया से भी वंचित हो जाते हैं, जो डिजिटल माध्यम से सशक्त रूप में दी जा सकती थी। इस प्रकार, यह स्थिति शैक्षिक समानता के सिद्धांत को चुनौती देती है और सामाजिक न्याय के संदर्भ में एक गंभीर प्रश्न खड़ा करती है। भाषाई असमानतारू डिजिटल शिक्षा में भाषा भी एक महत्वपूर्ण बाधा के रूप में उभरती है। अधिकांश गुणवत्तापूर्ण डिजिटल सामग्री अंग्रेजी या कुछ चुनिंदा भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है। भारत जैसे बहुभाषी देश में यह स्थिति उन विद्यार्थियों के लिए अवरोध उत्पन्न करती है, जिनकी मातृभाषा अलग है। परिणामस्वरूप, ऐसे छात्र सीखने की प्रक्रिया से अलग-थलग महसूस करते हैं, जिससे उनके आत्मविश्वास और सहभागिता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार, भाषा—आधारित यह विभाजन न केवल शैक्षिक

असमानता को गहरा करता है, बल्कि सांस्कृतिक विविधता के सम्मान के सिद्धांत को भी कमजोर करता है।

10. साइबरबुलिंग, भ्रामक सूचना और सामाजिक अलगाव— डिजिटल वातावरण जहाँ एक ओर असीम संभावनाओं का द्वार खोलता है, वहीं यह सामाजिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से नई प्रकार की चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करता है। ये चुनौतियाँ उन मानवीय मूल्यों/कृत्यों जैसे सम्मान, करुणा, सत्यनिष्ठा और समुदाय की भावना पर प्रत्यक्ष रूप से प्रभाव डालती हैं, जो किसी भी स्वस्थ समाज की आधारशिला होते हैं।¹

10.1 साइबरबुलिंग और ऑनलाइन उत्पीड़न— डिजिटल युग की गुमनामी और भौतिक दूरी का अभाव अनेक बार ऐसे वातावरण को जन्म देता है जहाँ व्यक्ति बिना परिणामों की तत्कालिक अनुभूति के अपमानजनक या आक्रामक व्यवहार करने के लिए प्रवृत्त हो जाता है। इसे सामूहिक रूप से साइबरबुलिंग कहा जाता है, जिसमें धमकी, अपशब्द, घृणास्पद टिप्पणियाँ या ऑनलाइन उत्पीड़न शामिल हैं। यह समस्या विशेष रूप से विद्यार्थियों और किशोरों में गहरे मानसिक और भावनात्मक प्रभाव उत्पन्न करती है, जैसेकृअवसाद, चिंता, आत्म-सम्मान में गिरावट, और कभी-कभी आत्मघाती प्रवृत्तियाँ भी। डिजिटल प्लेटफॉर्मों का ऐसा डिजाइन, जो त्वरित प्रतिक्रियाओं और निरंतर संचार को बढ़ावा देता है, उपयोगकर्ताओं में सहानुभूति और आत्म-नियंत्रण की क्षमता को कमजोर करता है, जिससे इस प्रकार के नकारात्मक व्यवहार की संभावना बढ़ जाती है।

10.2 भ्रामक सूचना और दुष्प्रचार— डिजिटल माध्यम सूचना प्रसार का सबसे तीव्र माध्यम बन गया है, किंतु यही तीव्रता गलत सूचना और दुष्प्रचार के प्रसार को भी बढ़ावा देती है। गलत सूचना वह होती है जो अनजाने में झूठी जानकारी के रूप में साझा की जाती है, जबकि दुष्प्रचार जानबूझकर भ्रम फैलाने के उद्देश्य से प्रसारित किया जाता है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों के एल्गोरिदम अक्सर ऐसी सामग्री को प्राथमिकता देते हैं जो सनसनीखेज, विवादास्पद या भावनात्मक रूप से आवेशित होकर ही वह तथ्यात्मक न हो। परिणामस्वरूप, विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, तर्कशीलता और सत्यनिष्ठा जैसे मूल्य कमजोर होते हैं, जबकि समाज में अविश्वास और वैचारिक ध्रुवीकरण की प्रवृत्ति बढ़ती है।

10.3 सामाजिक अलगाव और डिजिटल निर्भरता— अत्यधिक स्क्रीन-समय और ऑनलाइन संवाद पर निर्भरता ने विद्यार्थियों के वास्तविक सामाजिक जीवन और मानवीय संबंधों को भी प्रभावित किया है। "अनंत स्कॉल" व "निरंतर सूचनाएँ" जैसी डिजाइन विशेषताएँ उपयोगकर्ताओं को लंबे समय तक आभासी दुनिया में बाँधे रखती हैं। इसके परिणामस्वरूप, व्यक्ति का वास्तविक दुनिया से संपर्क कम होता जाता है, जिससे अकेलापन, चिंता और सामाजिक अलगाव की भावना बढ़ने लगती है। यह स्थिति न केवल मानसिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, बल्कि सहयोग, सहानुभूति और सामुदायिक भावना जैसे नैतिक मूल्यों को भी क्षीण करती है। इन चुनौतियों का समाधान केवल विद्यार्थियों को "बेहतर व्यवहार करने" की शिक्षा देने से नहीं हो सकता। इसके लिए तकनीकी संरचनाओं और डिजिटल प्लेटफॉर्मों के नैतिक पुनरुद्दिष्टाई की आवश्यकता है—जहाँ पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और मानवीय गरिमा को प्राथमिकता दी जाए। यूरोपीय संघ द्वारा पारित डिजिटल सर्विस एक्ट जैसे विनियामक प्रयास यह दर्शाते हैं कि अब व्यक्तिगत जिम्मेदारी से आगे बढ़कर प्रणालीगत जिम्मेदारी पर ध्यान देना समय की मांग है। यही दृष्टिकोण डिजिटल शिक्षा को मूल्य-संवेदनशील और मानवीय दिशा में आगे बढ़ाने में सहायक हो सकता है।

11. मूल्यों और प्रौद्योगिकी का संश्लेषण: एक एकीकृत ढाँचे की ओर— डिजिटल युग में मूल्य-आधारित शिक्षा और प्रौद्योगिकी के बीच संतुलन स्थापित करना केवल तकनीकी सुधार का प्रश्न नहीं, बल्कि एक गहन शैक्षिक और सामाजिक जिम्मेदारी का विषय है। इसके लिए एक समग्र पारिस्थितिक दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जो तकनीकी उपकरणों की सीमाओं से आगे बढ़कर उन मानवीय, नैतिक और सामाजिक आयामों को समाहित करे जो शिक्षा के मूल उद्देश्य को परिभाषित करते हैं। यह एकीकृत ढाँचा चार प्रमुख स्तंभों पर आधारित है—डिजिटल नागरिकता, आलोचनात्मक चिंतन, डिजिटल सहानुभूति, और हितधारकों की परिवर्तित भूमिकाएँ।¹

12. डिजिटल नागरिकता नैतिक ऑनलाइन व्यवहार की नींव— डिजिटल नागरिकता का अर्थ है प्रौद्योगिकी और इंटरनेट का सुरक्षित, जिम्मेदार और नैतिक उपयोग करने की समझ और क्षमता। यह अवधारणा आधुनिक शिक्षा में उस "नैतिक कम्पास" की भूमिका निभाती है जो विद्यार्थियों को डिजिटल व्यवहार के मानदंडों से परिचित कराती है।¹ अवधारणा और प्रमुख घटक रू डिजिटल नागरिकता में अनेक घटक शामिल हैं, जैसेकृडिजिटल अधिकार और जिम्मेदारियाँ (जैसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता बनाम दूसरों का सम्मान), ऑनलाइन सुरक्षा (साइबरबुलिंग और शोषण से बचाव), गोपनीयता (व्यक्तिगत जानकारी की सुरक्षा), तथा डिजिटल शिष्टाचार (सम्मानजनक ऑनलाइन संचार)। ये तत्व विद्यार्थियों को तकनीकी साक्षरता के साथ-साथ नैतिक विवेक से भी सशक्त बनाते हैं। पाठ्यक्रम में एकीकरण: डिजिटल नागरिकता को एक पृथक विषय के रूप में नहीं, बल्कि शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में समाविष्ट मूल्य के रूप में एकीकृत किया जाना चाहिए। छात्रों को व्यावहारिक रूप से यह सिखाना आवश्यक है कि—सुरक्षित पासवर्ड कैसे बनाएँ, ऑनलाइन स्रोतों की विश्वसनीयता कैसे परखें, व्यक्तिगत जानकारी साझा करने से क्या खतरे हो सकते हैं, तथा अनुचित ऑनलाइन व्यवहार की रिपोर्टिंग कैसे करें। इस प्रकार की शिक्षा डिजिटल युग के नागरिकों को जिम्मेदार, नैतिक और आत्म-नियंत्रित बनाती है।

13. हितधारकों की परिवर्तित भूमिका— मूल्य-आधारित डिजिटल शिक्षा का सफल कार्यान्वयन किसी एक संस्था या व्यक्ति का कार्य नहीं, बल्कि एक साझा सामाजिक दायित्व है। इसमें शिक्षक, अभिभावक और नीति-निर्माता-सभी की भूमिकाएँ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

शोध पत्र

13.1 **शिक्षक**— शिक्षक अब केवल ज्ञान—संप्रेषक नहीं, बल्कि डिजिटल मॉडल और नैतिक मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हैं। उन्हें डिजिटल उपकरणों के उपयोग के साथ—साथ डिजिटल नैतिकता में भी दक्ष होना चाहिए। उनके आचरण में निष्पक्षता, सम्मान और संवेदनशीलता वह मॉडल प्रस्तुत करती है जो विद्यार्थियों को नैतिक आचरण की ओर प्रेरित करता है।

13.2 **अभिभावक**— घर अब डिजिटल शिक्षण का एक विस्तार बन चुका है। इसलिए माता—पिता को अपने बच्चों की ऑनलाइन गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी निभानी चाहिए। स्क्रीन—टाइम का संतुलन, सामग्री की गुणवत्ता, और डिजिटल सुरक्षा पर स्पष्ट संवाद आवश्यक है। घर और स्कूल के बीच निरंतर सहयोग ही सुरक्षित और मूल्य—आधारित डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण कर सकता है।

13.3 **नीति—निर्माता**— सरकारों और शैक्षणिक संस्थानों को ऐसी नीतियाँ विकसित करनी चाहिए जो डिजिटल नागरिकता और मूल्य—आधारित शिक्षण को सुदृढ़ बनाएं। प्लेटफार्मों को उनकी सामग्री और एल्गोरिदम के लिए जवाबदेह बनाना, तथा उपयोगकर्ता विशेषकर बच्चों के डेटा की गोपनीयता सुनिश्चित करना अनिवार्य है। भारत का डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण अधिनियम 2023 इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। अंततः, यह समझना आवश्यक है कि कोई भी एकल हस्तक्षेपकृचाहे वह शिक्षक प्रशिक्षण हो या नीतिगत सुधारकृतब तक प्रभावी नहीं हो सकता जब तक कि पारिस्थितिकी तंत्र के अन्य तत्व समान रूप से सक्रिय न हों। एक बहु—हितधारक रणनीति ही ऐसी डिजिटल संस्कृति को जन्म दे सकती है जो न केवल ज्ञानवान, बल्कि संवेदनशील, जिम्मेदार और मूल्य—संपन्न नागरिकों का निर्माण करे।

8. **निष्कर्ष**— यह अवधारणात्मक अध्ययन स्पष्ट रूप से रेखांकित करता है कि डिजिटल युग में मूल्य—आधारित शिक्षा केवल प्रासंगिक ही नहीं, बल्कि अत्यावश्यक है। 21वीं सदी की शिक्षा के सामने दोहरी चुनौती हैकृएक ओर उसे तकनीकी नवाचार को अपनाते हुए ज्ञान को अधिक सुलभ, लचीला और प्रभावी बनाना है, वहीं दूसरी ओर उन शाश्वत मानवीय मूल्यों को भी सुरक्षित रखना है, जो एक संवेदनशील, न्यायपूर्ण और सामंजस्यपूर्ण समाज की आधारशिला हैं। मूल्य—आधारित शिक्षा कोई पूरक तत्व नहीं, बल्कि समग्र मानव विकास की आत्मा है, जो व्यक्ति के चरित्र, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, सहानुभूति और सामाजिक उत्तरदायित्व को सुदृढ़ करती है। साथ ही, डिजिटल शिक्षा के अनेक लाभों के बावजूद यह स्वभावतः मूल्य—तटस्थ है, यदि इसका प्रयोग विवेकपूर्वक और नैतिक दृष्टिकोण से न किया जाए, तो यह साइबरबुलिंग, भ्रमक सूचना, सामाजिक अलगाव और नैतिक क्षरण जैसे गंभीर परिणाम उत्पन्न कर सकती है। इन दोनों क्षेत्रों—प्रौद्योगिकी और मूल्य—का संतुलित समन्वय ही शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य को साकार कर सकता है। यह समन्वय “डिजिटल नागरिकता”, “आलोचनात्मक सोच” और “डिजिटल सहानुभूति” जैसे तत्वों के माध्यम से संभव है, जिन्हें शिक्षकों, अभिभावकों और नीति—निर्माताओं सभी को एक साझा उत्तरदायित्व के रूप में अपनाना होगा। शिक्षा का लक्ष्य केवल सूचना—समृद्ध व्यक्ति तैयार करना नहीं, बल्कि ऐसे संवेदनशील नागरिक बनाना है जो जटिल नैतिक निर्णय ले सकें और समाज में सकारात्मक परिवर्तन के वाहक बनें। भविष्य की दिशा एक ऐसी पीढ़ी के निर्माण की ओर होनी चाहिए जो न केवल तकनीकी रूप से दक्ष हो, बल्कि नैतिक रूप से भी सजग और मानवीय हो। यदि हम डिजिटल युग की शिक्षा में मूल्यों को उसकी केंद्रीय धारा बनाए रखें, तो निश्चय ही तकनीकी प्रगति मानवता की सच्ची प्रगति का माध्यम बन सकेगी। यह केवल शिक्षा के भविष्य का नहीं, बल्कि मानव सभ्यता के भविष्य का प्रश्न है।

References

1. Singh, R., & Sharma, M. (2023). *Value-Based Education in the Age of Digital Transformation: A Conceptual Review. International Journal of Educational Development, 99*, 102747. <https://doi.org/10.1016/j.ijedudev.2023.102747>
2. Nair, P., & Thomas, L. (2022). *Integrating Moral and Ethical Values in Online Learning Environments. Education and Information Technologies, 27*(10), 13459–13474. <https://doi.org/10.1007/s10639-022-11256-3>
3. Kumar, A., & Bhattacharya, S. (2021). *Revisiting Value Education for the 21st Century Learner. Journal of Human Values, 27*(2), 98–111. <https://doi.org/10.1177/09716858211013542>
4. Komalasari, K., Abdulkarim, A., Saripudin, D. & Iswandi, D. (2024). *Blended learning based on living values education for the development of students digital citizenship. Kasetart Journal of Social Sciences, 45*(4), 1229–1240.
5. Joshi, J. H. & Sonara H. J. (2024). *Value Based Education in Modern Indian Education System. Educational Administration: Theory & Practice, 30*(6), 99–103. doi:10.53555/kuey.v30i6.511
6. Hassan Sain, Z., Baskara, R. & Vorfi, A. (2023). *Rethinking Pedagogy in the Digital Age: Analyzing the Effectiveness of E-Learning Strategies in Higher Education. Journal of Information Systems & Technology Research, 3*(1). doi:10.55537/jistr.v3i1.772.
7. Khare, A. (2021). *Analytical Study of Indian Society in Relevance to Value Based Education. Turkish Online Journal of Qualitative Inquiry, 12*(6).
8. Syobar, K. (2024). *Basic Value of Education in the Era of Artificial Intelligence (AI). International Conference on Applied Social Sciences in Education, 1*(1), 251–254. doi:10.31316/icasse.v1i1.6847.
9. Kumari, N., Sachdeva, M. & Verma, K. (2023). *Digital Citizenship Education in Higher Education: A Study in Indian Perspective. Journal of Higher Education Theory & Practice, 23*(20). doi:10.33423/jhstp.v23i20.6693.